अगम गोपीचन्द योगी
कुशाङ्गी माया में
प्रथम भाग

लेखक बन्नायक
कुवरसिंह मनराज
सुपुत्र स्वर्गीय ब्राह्मसिंह मनराज
बसेड़ी पला नया अभमोहा २० गी०

कुलव प्राप्ती स्थान
कुमाऊँ साहित्य सदन
सीताराम बाजार दिल्ली ६

प्रथम संस्करण २००० प्रतियाँ सन १९५२ म०
संवाचिकार सुरुचित है

नोट—‘अगम गोपीचन्द योगी’ से आगे की
फलनी दूसरे भाग में छपेगा

म०—लुमन कम्प्यूटिंग एजन्सी हार्वार्ड वाला, दरबाजा, सीताराम दिल्ली द्वारा।
भूमिका

प्रस्तुत कुस्तक प्रमाण गोपीचन्द जोगी नाम हुआ उनी भाषा में घायल है। वह ज्ञात विविध है कि राजा गोपीचन्द दसरे सबी के कप्तान में वाम गण के राजा थे और उनके पिता का नाम पद्मवाच था। राजा गोपीचन्द की बहनी कुल बच्चों-बच्ची को मान्य था। यहूदी गोपी भी एकदिन में बिजन गांव से विदेश में गए। वह भी भोजन में मुख्य है कि गोपीचन्द की घोड़ी पर राजगीर तथा लाल की पुनियारी भी घोड़े उनके बालन में यह भी बताया जाता है। कि तीन घोड़ों में शुद्ध हो घोड़ी की जिसमें इतनी प्रकाश पद्मवाच के यथार्थ यह घोड़ी-बच्ची के पीछे पर घोड़ी-बच्ची मानी गई। घोड़ी का इस दान का समरपण पर दुख हुआ तथा प्रथमे गुरु गोपीचन्द को राजमार्ग के यथार्थ यह घोड़ी-बच्ची मानी। जिसके पारे घोड़ी गोपीचन्द ने गुरु की घोडं में जाता हुआ उपदेश दिया। जिसले तभी अपने घोड़े पर घोड़े पर दुख दुख घोड़े घोड़ी गोपीचन्द के यथार्थ के लिए को झांक बायों को दांवित किया। जिसके पारे गुरु सबवी घोड़ी बायों के घोड़ों ने हाल घोड़ी घोड़ी-बच्ची तथा घोड़ी घोड़ी सबूत दिया। घोड़ी घोड़ी घोड़ी-बच्ची घोड़ी घोड़ी सबूत दिया। घोड़ी घोड़ी सबूत दिया। घोड़ी घोड़ी सबूत दिया। घोड़ी घोड़ी सबूत दिया। घोड़ी घोड़ी सबूत दिया।
भूमिका

प्रस्तुत गृहस्थ गोपीचन्द्र योगी नाम कुमारी प्रभाव में गात्र के स्थानों में विश्रामरथ है। यह गात्र विदित है कि राजा गोपीचन्द्र दसथ्य स्वतंत्र यज्ञों के विलास में पाप के राजा थे और उनके पिता का नाम पदमस्थल था यात्रा का वाण अनुसारी ही। राजा गोपीचन्द्र की कथा यह वह इतने स्वतंत्र बच्चे को मातृस्वतंत्र है। साधु घोष भी एकतारे में सघन गायक जुगाड़ते हैं। बताया जाता है कि गोपीचन्द्र की सोलह सो राज्यों में तथा सात की नृत्यी गी घोष उनके बालाम के यह भी बताया जाता है कि तीन बाली में दुख हो बाली बी जिसमें इसी प्रकार पदमस्थल के मध्य वह गोपीचन्द्र ने राज्य राज्य ही जयम राज्य के सम्बन्ध में घोष माता की इस अनुसार गोपीचन्द्र ने मुख देखा में बालिका विवाह व ईश्वरहृद में संस्कार के दुखदुख भी एक गोपीचन्द्र के वाण के लिए घोष की वाणों को प्रायोगिक फिरा। विवाहों में मुख व ईश्वरहृद गोपीचन्द्र व शास्त्रग्राम में नृत्यी ने हार गोपीचन्द्र ने मुखदुख भापी तहरास अंग परस के कुचे में जाकर पदम घोष दिया घोष के प्रथापने घोष हरे संगीतकार में शास्त्रसम्पदायों के भाषण जिसें गोपीचन्द्र ने कुचे ऐसे तत्त्वों को लिया जो प्रायं राज वह व्रत व वाचनय स्वतंत्र है प्राचीन स्वतंत्र प्रथाने मुख को वाण वाण के मंडार में तेन प्रायं बालिका काव्यास गाने मुख को व विलास पत्र के विश्वसन करने के लिए कुचे की धर
आमर गोपीचंद्र योगी

dवन्न नाम्र देवा तुम, हे जय दयाला।
गरीबी पुजार पारि, करि दिया रघुला।
तुम्हारे मनप पारि, कागज लेखन।
शिशा नबै हर्ष लोही, वारह कसूँ
रस महि दिया अधूर, था कागज पारि।
कागज की चल हुतो, रह रोज जारी।
सब लोगों दिमांक में, लांगे वो ध्यान
पहला में ध्यान लाग, घड़ियां में काल।
धोंड़ी मोत परिचय, आंपड़ लेखन।
सब भाई कर्जों होंगी, में हाथ जोड़न।
को कूड़ गजतियाँ होली, सच में करिया
कागज के पढ़ि बेर, ध्यान में धारिया।
चैतिक विताय लिख, सेंड़ी बैठक जाना।
ठ किताब पढ़ि बेर, लगा ज्ञाना।
न मोहत हों लिखि पढ़ि, रन कूड़ आंद्र
आपड़ा धोलिक धोंड़, प्राचार रहन।
पत पाँचो घरे दिन, लेखी कागजियो।
सुविचा रहलु तुम, कागज भंगण मां।
हरें बापू वाज्य मल, चंसित हाम।
मार्गी ईं ऊजूलो दे री, वेकुड़ड़क धाम।
गोपीचंद्र योगी

पंच नाम देवा तुम, है जया दयाला।
गरीबी पुकार पारि, करि दिया रुपाला।

तम्हर भरोष पारि, कागज लेखन।
शिशा नवे हार्द जोड़ी, अरब करनु
रस भरि दिया प्रभु, त कागज पारि।
कागज की चल हजो, रह रोज जारि।

सब लोगों दिमाज में, लोगे ओ थ च्यान
पार्वतों में च्यान लाग, वहेला में कान।

थोड़ी भोज परिचय, श्रापड़ लेखन।
सब माई बन्धों दंगी, में हाथ जोड़न।

जो कुछ मजबूत आलो, जोध में करिया
कागज के पत्ते बेर, च्यान में धरिया।

वैलिक किताव लिख, संवाद वेक ज्ञाना।
उ स्तिताव पत्ते बेर, लगाया ध्याना।

न मोहे हों लिखि पदि, गन कुछ जाहू
आपड़ा वैलिक ठोड़ी, प्रचार रूप।

पत पंची घरे दिन, लेखि कागजवर।

खुशिवा रहलि तुम, कागज भंगि गो।

सि गुण बाभु बाभु स्वर, अनन्दमिह नाम।
स्त्रालीप ईत ऊली दे गी, वेकारङक धामा।
ध्वेरी नाम स्वयं, पहली प्लान नया।
कुछ नाम स्वयं याद कर स्था।
सब भाई बन्धों हंसी हात है जोशीपा।
किताब बढ़ाई खारी तब तक पढ़ता।
तुम कोई सर्दियों रोब में मिलकर, 'कुछ रख सकते हैं।'
किताब पढ़ी लिखा ध्यान धारा के के।
किताब पढ़ाव होच समझके पेशा।
राजा धीरे धीरे बाते लेने कामज मां।
पढ़े देख राजा भाषा भाषा बनाए।
पैदा इन सुखी दृष्टि, बातों छू चुकी कस्ती।
सब बोली में भाषणी बोले है।
बाहर न धर पूरी सूर्यो बातों
गोरीचन्द की लेखकीकै। ईंधन सह रहता।
क्रम क्रम रह गए। वह बच कारी
एन्नी को पेटिया। रेखा की ए बारी।
गीड़ बंगाल रहा गोरीचन्द् राज।
मान स्वाभाविक यह श्रीमानम्। आज।
गोरीचन्द् राम बन राज सबसी सब।
गोरी बंगाल सुख नाम बने गोरी
बनी। गंगापी दला मान गई नीलिया।
भाला गई बगर में न कै भेलिया।
सब चिंता पूरा सिद्ध। कभी एक मारी।
बृहस्पति जन्म निखी कासी कीश परी।
राजा गोपीचन्द ने धन दान कर कुछ दिनों के लिए राजा की तरह खाने-पीने का जीवन जीया। वह एक गुरू की तरह रहने में सक्षम रहा।

राजा गोपीचन्द ने धन दान कर कुछ दिनों के लिए राजा की तरह खाने-पीने का जीवन जीया। वह एक गुरू की तरह रहने में सक्षम रहा।
बलेदी फिकर कैदी, रात दिन मारी
फिकर में बैठी राती, व्यांदी एकदरी
हीन हार होई रैंडर, हई वे ज्याना
सब भुले डुल होंछ, कालियर नक्सदीशा
चन लुकी खिले तुम, पुरी खाट सारी
कैसी कैसी बीली बाँधै, मानवती पारी
रागा गोपीचंद, हय, बैठी रंगबांसा
रतन कुरार हई, पति नामी खासा
तौ हली नी गोपीचंद, रातीया टेंमा
पांग पारी बसम कोली, बैठैं टेमा
बय माता मानवती, बैठो फूंकिया
चले की फिरार पारी, दिनों भाँग अखोंहा
पढ़ी ने नजर अव, गोपीचंद पारी
बैठी बैठी मानवती, कोली व नोहरी
मानवती हुवी, रेंछ चले गम पारी
गुरार के वह हय, गोपीचंद पारी
राज कनी व्यल हय, देखड चाहां
माता कनी मारी गम, व्यलक खापड
पैली दिन याद केंद्र, ब्रांसु भाई बांदी
गम मारी ब्रांद्र तव, व्यलें मे पढ़नी
झाँकों पारी ब्रांद्र, पह, गोपीचंद पारी
बारी तकी बुद कोंछ, कांग्रे भे मिशारी
ब्रांद्र मान शाक हैर, बांदी न बाांध
नि खानि सफ हुया, दूध निश्च हैर
फिकर में पड़े गोय, सन में विचार
गोपीचन्द देखो तब, शीती बार पारा
तब भाव दौड़ी बैर, खास वां नींकर
शुद्ध रज्जू बात कुछ, तुम से न फिकर
शाता मैनावती रज्जा, रूप पाकर हईं
मोहरिक द्वार शामी, ठाडी हईं रई
गोपीचन्द देखो दुएं, माता क जो हाल
देखो बैर माता पारा, जानी तजहाजब
बहेड़ी क पारा जाई, आँखें जो खोंसों बनहीं बनाई ईज़ा, त्या वात है खुशा
शाही के निस्फाय ब्रम्ह ईज़ा, त्या भाऊँ शाती पारी
त्या रूप देखी ईज़ा, फिकर में शाही
के वातक दुख हय, तू वाता मकड़ी
कि दी ईज़ा भाई काली, चिल्लाकी लिकली
वा रिश्द ब्यारी, तेरी की सी नींविक्षी
जय खुरेके दुख ईज़ा, तू ब्रम्हा मकड़ी
जब तू क्रङ्गी ईज़ा, में तिस कहला
दुखनि बतालि ईज़ा, में कसी बुझुला
के वात की नामी हईं, पुर में कहला
तू दास में आई ईज़ा, में सुख कौं पीला
तब मेंनवति घरि, च्यल सिर हारा
कान खोली सुद च्यला जो में कौन बाता
दुख हय भारी च्यला, सुद ले कहला
पैलिक बैतिचलि भाव, खुल कारी बाता
भाग वाजें भिया च्या, त्यह के शरीर
सुरच के तप भिया बड़ रंग पहरा
सारं उपालम च्या, चलांच हुकमां पर
जवान मुं मरि, मया कोल्हा मनमय
परल च्या चार्य-च्या, सत मान दाना
खार्ड की दुर च्या, आशीर में निताना
वही छा फिरक च्या, तैले भक्ती
ममि जधे वाय मेरि, अर लिही
बड़ च्या राज पाट, विनाजा फक्रीरा
सतों की संगत कर, जो विरोक पिंगा
मरं है छुटी जाल, शरीर आशीर
जगात में हई जाल, अमर शरीरा
तब कोंढ मोपी बंद, ईंजा मेरि लुमा
य कोल्हा मन घरि, किले हय रुखा
कल बीत च्या अमाय, ततुए एक सारा
ईंजर की मंथा हई, अपरम ले पारा
जो लिंग जनम ईंजा, मरल जंगा
पूर्ण हरे वाहों में ईंजा, क्या लियो फिकरा
कस कसा राज मरा व संघर्ष केना
निशि भमा मर एक दिना
भाँत शीशों सेना नकल सहरेता
युविस्तर सिद्धान्त भी गया सवा
जगात में कोंढ ईंजा, भाज के अरमा
सनमक आर्क
वर कूटेन मेनावति सुगन्ध क्षलन बाता ।
अमर है साधू मेष, बालानगर दुका ।
राज पाल बोडी बैर, साधू चनि गया ।
सुखदेवन मसीरठ व, अमर हैं गया ।
दोहा—मेनावति गोपीचंद की ।
वेदा जी बालेपन में तज गए, धुर जी भगत परवाने ।
बालपुरी में जा किया, भगन अशत अश्वान ।
मेनावति सममेह तब वथले कही ।
अमर पूर्धू नात लगेहूँ कहाँगी ।
गोपीचंद मेनावति की ।
दोहा—नाताजी ना कुछ देखा जमलेने, ना जाखा रस भोग।
ना विन्ती धन लन्खयी, ना सलतनत सरते ।
ना धुनक पाल मे दुर्ख मिला, नहीं जतन भते हरत बिठाया ।
नहीं जुगाज किया कुछमें, और ना कुछ खुश पाया ।
माता जी ना कार्य किया कुछ में, छिरन धाक-धाक माई ।
बर वरस तक और धुई-तुम, राज और करने दो माई ।
वथले नाट मेनावति, एक निं मानिं ।
राज हड़ दिया हड़, एक जस हिनि ।
मेनावति सममेह, गोपीचंद कंसी ।
जनम गुफत कंस, साधू देना हंसी ।
तव कुछ गोपीचंद, दुक्हा ईजा बाता ।
कसीके छोड़ू ईजा, छबि तयार साता ।
ईजन झा राज पाट, और चर चारा ।
क्या धरि रहत ईजा, साधू मेष पारा ।
वहाँ हैं- घर में ईंजा, मंदिरा बनवाल।
अब्बस तीरथ धाम, घर में कहला।
किसौदी करीव ईंजा, साधु क चक्रग।
ब्यो जस है जाल ईंजा, साधु हई वेंग।
मेनानाति गोपीचंद को
दीवा-वेदा जी बिना हटाये ना है, काल चक्रकी चौंड।
जो वनना चाहे उस मजबरसे, तो ले सतमुह कीशोट।
छोट व्यशा राज पाठ, साधु सेवा कर
सेवा मख भेजा पालें, हई वै अभार।
पशुरों की पूजा करीं, व्या फल मिलित।
हंसी करी मंगवानों की, नराज है जला।
गोपीचंद का मेनानाति को
दो-माताजी जिसकी दिव्य तकदीरहैं, मिले दू नाकोर योग।
जो नर बिना नसीब का हो, वह साधन है तब जोग
भर पेट कहीं कूद मिलता नहीं, तब अधे हाथ पसारत है।
पेट की भूक फिठाने की सब, रूप जोगी का भारत है।
घर घर जाई बेंग, बलख जगानी।
घर मज लोगों कहीं, तंग ले करनी।
गेहवा कपड़ परि, हाँगी साधु हंसी।
साधु में धीर बेंग, किरें के जानी।
लोगों कहीं ठगी २, वे सीक हूंजन।
सोल फिकमक ईंजा, में यों घरन।
शंकड़ी ना मेंजईजा, ईं दाव मांडन।
दिन भूख हुई उ लाढी, राति जाक निना।
ईशा उ तथा मेरि ईशा, देखिया नम्बर।
पर पर पर ईशा, का लगौंँरा अधर।
हर पर निक ईशा, कती में मांगौंँला।
साधु लोगों साधन बिने, कि कसीका रिपुला
जून के पंलग छोटी, कसीका वा रहौन्ला।
तुम छोटी बेंग ईशा, एकले का रोला।
ईतन छा राज पाठ, नाकली गीताला
य एँस भ्राम छोटी, दुःख कसी सौला।
मैनायानी

dोहा-बेटा जोगी। जोग-जुमा कराहे हैं। चारहूँ जुगका राज
भ्रामा पूर ब्रिलोक में चतुर सब्री के लात
एक जोग सापे दोजे राम, सजन तिजे काया;
कर ज्ञान कोष लोभ मोह समता पौँहों इन्द्रियों भारत हैं।
वश तो बेटा तजो अमरी, राज की ओब्ब को महेरी
गुरु उपदेश शुरा को सह्री, वापस दर सबतर वानिसताली
भाव जोग सवीच्छ, मानिजा व्याहीरा।
कति रन साधु ईशा, कति रन पीरा।
कया हंसी बाढ जोड़, की हंस लाक रैनी।
संत महंतोंके ईशा, रंगों कसि लगानि
पूर पत बता ईशा, लागी जानु बटा।
कील तेरि पुरि हलि, निभि जाती हटा।
मैनायानी जयले कसी, बाढ़ ले बड़हा।
हर नात सोचि बेर, सब समझै।
त्यार बंगालम न्याला, बागक भित्ता
तप मज बैठि इया, गुरुं बालनवरा
गुरुक भाषीन जाई, चरन छड़िये
में फूल पाती तुलं भाषीन परिये
खरायो में सिर भूकी, बाँते व खाचार
गुरुक भाषीन च्याला, करिये पुकार
गुरु जी पुज़िया जन, बन्ने दिये हाला
जी दिला, ऊपदेश गुरु करि लिये ख्याला
य त्यार वचन ईंजा, मानि हाँ च सब
साधु हसा लिज़ि ईंजा, जाद मय अव
मसाल तु राजे पाठ, सार बांग डोर
र्याल में परिये ईंजा, मेरि प्रजा और
अव छोड़ि हाँ िया, राज बंगालक
वैगार ह मोय ईंजा, य त्यार बातो का
बट लांग गोपीचंद, गुरु पाता जांचा
गुरु पायत जहै, बेरा आदेश करुँचा
गोपीचंद फूल खेड़ी, लगांड बौफेरा
देखि लिया गुरु बिलें, भाषि खोली बेरा
गुरु जी पुजनि अव गोपीचंद हांि
क्या काम भाई आ बेटा काम क्या छ येि
क्यि त्यार पर हय क्याला त्यार नामा
क्या नाम िया ईंज बाजु का करि कामा
गोपीचंद
दोहा—गुरु बी फूलम सैन का पुत्र हूँ, गोि बंगाला है ग्राम्म
में नृप हूँ ईंज नयरी का, गोपी चंद है नाम
ईश्वर शरीर मन को समझाता हूँ, उहता नहीं दिल भ्रमीरी
शान्त को त्यागना हुई। वह दिल लगा फक्रीरी में
गोपी चन्द्र हाति अव, गुरु जी पुत्रजि
वह दुःख आय बेटा, बया है: गोपी कार्यि।
बया घोर रहच बेटा, फक्रीरी मेषमाँ
वह भारी दुःख हय, सादृश
फक्रीरी मेषमाँ बेटा, अलख ज्ञाति
नग सुट घर घर, माँगी हंसी वाकि
बनीन में सिंध हय, छाल बिछे बेरा
सादृश की जिन्दगी बेटा, बह्रू हता
र्या के न दिल सब, ये तुक लाभन
किंहरी कर्षे बेटा, भाषण में भ्यान
रज नि मानन सब, शास तरे की बाता
बांधर चलयी हब, जन्ताक साता

न सादृश संबंध कैरि, नत कर भ्यान
अर्थ न छाँडन भ्यान, उपेश कुमार
राज कुमार बेटा, जोड़ तेरी सान
प्रजा करी भ्यान, बड़ सन मान
बड़ भ्यान दान र्या, घर का भ्रमीरा
मान मेरी बात बेटा, न बन फक्रीरा
नामी छा उमर भ्राजी, योदा भुष भ्यान
किंहरी कर्षे बेटा, तु जोगीक भ्यान
सोलंकी रामिया र्या, सात सो चेहरियाँ
माता प्यारी मैनाली, जाक छें सैंहिया
माई व बहिन त्यर, स्वर तिरगारा
कसीक छोड़ले बेटा, सजुक य घारा
ऐं तुक साथ ग्यारा तेहि, तोफ माल खाना
भान घन मोहम भरि, पूर जा सामान
के बावकि कम निहं, सत कर पूरा
राज तु म छोड़ बेटा, जवानि अधुरा
लोल तौ राङियो त्यर, पप बढ़ मारी
कसीक छोड़ले बेटा, माया सतू पारि
मानावति त्यर बिना, कसीक रहि
द्व मैं वोकी बेर, ते कसी छोड़लि
प्यार फि बहि तेहि, कसीक मानलि
वे जसी सकल माई, काकखी देखलि
मान बेटा वात मेरि, कर इंद्र ख्याला
कसीक छोड़लें सच, माया जन जाला
बाधु की जिन्दगी हई, बहुत कठोर
तबु माया छोड़ी बेर, रति एक बोर
तू कसी रहले बेटा, येंतुक दुःखारा
इंद्र ख्याल कर अब, अप्पड़ा मनंमा
भूपीर घरक हये, दुःख में का रले
पलंग में सिडिया तु, जमीन मा स्थले
सुदु काशी दु विदिया, तू कसी मापलें
पेटक खातर बेटा, दर दर फिरलें
बंग खुट दर दर, अलख जगालें
रष्ट के निन्नल अब, भुरे कसी स्तेले
गृहस्ती में जो प्रामाण्य प्रा, उस नियम बौधि
क्या हो न न हो बेटा, क्या बिहारी मति
कहूँ समाधानि गुरु, गोपीचन्द कथी।
गोपीचन्द धुरि हम, साधू बन हंसी
गुरु कथी समाधि, गोपीचन्द हाला।
साधू में वना भो गुरु, ध्यान करि ग्लाभाला,
न बचे म्या माई गुरु, न ही विशारा
न माया मियारि ककिः, न मेरि कपरा
द्वानि वानि माया ज्ञा है, दि दिनक मेला
वेति झूटि बेर सच, फिर की भिरिला
हुने माया मोह करि, करिया वहाँः
उपदेश दियो गुरु, कहर है जाने
ईति छिया ध्यानि मेरि, अनकःयों हाला
भोर की आपका गुरु, तुम करो व्याला
मेरि केकि कहाँ गुरु, ईति मिका
उपदेश दियो गुरु, ध्यान घरि बेरा
जस तुम कहा गुरु, पालन कहता
उपदेश ध्यान सच, ध्यान में बहता
साधू लोग हनि सच, बड़ बड़ सन्यासी
उसकर चारिया गुरु, में रहोह दाति
गुरु बालनधर भव, द्वा में धारानी
गोपीचंद कयी जव, उपदेश दिनी
दोहा मति गुरूवर, उपदेश बतानो
खुश लिये गोपीचन्द, कान खोली कनी
शुक्र जालनचर का उपदेश
वेदना-बेटे यही मार्ग चाहिए जो योग का, पांच पकड़ते मृत्यु, पकड़ते शृङ्ग तृतीयों, तीस मार आदि-सूत, मन मारे तब मारे मारे शक्ति मारी।
चारों इंद्रीया वस में करे, तब होयं फक्कोरा।
गौ वन द्वार के शास्त्र से तत साध का पहल मारे।
तब करे साधन सबर सच, नियम नेम घर्ण नारे निबारे उपदेश।
गोपीचंद, ध्यान ली सुगी।
सां मन ज्ञान विन शुक्र पर कोला कोल।
धर जाई वरे शुक्र, कब्रहरी बिठला।
मंगी कोली बते वरे, अत्यं समझो।
लिने शुक्र आसीसवाद, धर जाई गोय।
कब्रहरी बिठाई वरे, मंगी हाती कोय।
वड बड पंडित तुला। जो जाती ध्यान दोहा अर्ध खोल में, मन लाग ध्यान
उठी वरे गोपीचंद, दोहा ले पहुँच।
ज्ञान मीन करि वरे, म समझाओ हुक्का।
ढल ढल पंडितोंके, मंगी जो तुली।
राज बढ़ दोहा कहनी, अर्थ छानो हुक्का।
एक दिन देम और, पंडित भागवनि।
आङड आङड संप्नाम, प्रेम लगान।
तव की गोपीचंद, शुक्र फात तोली साधु बन ब्राह्मण छा, माता की ज्ञा चोल।
सब लोग नवभी थे। यात्रा में कत्या ढांढे मोल गति, हार्दिक हैं लेखि।
पीरचंद कस्ती लङ्ग, सब लगभग हारी लोग बानु पीड़ा रहा, क्षण पड़ा करनों
करु, जग देखो। छाँट, फिरने इतना
साँझ में परिवार क़ब, न बिखाची हिंदबुन
पीरचंद एक वार, काकी नि मानन
स्वभावो में मुख क़ब, हैं खेल देखन
सब लोग जम हई लगानिक्षु विचारा।
लोग मन हवें करी सब, जिनि किसका।
राज हल शांति क़म, हमें क्रम क़ला
बिन के राज क़ंसी, स्वाभाविक चालूला।
पंडितों हैं केसा क़मि, करी बे विचारा।
उल्ट ब्रह्म निखाले था, तो अजुनारा।
तब क़नि पंडित ज्यू, साधू के बचना
कस्सेक संदेह क़ब, तहड़े हु लगना
मालामैनात बोली है उन्हें, सब बाहावत।
तब राज के क़स्ती लगा, शापु लोगों सात
करम में राजक ज़ा, साहब लें च
शापु झुलन क़सी, कस्सेक टालँड़
पंडित क़सी गुमस्त आयौ, पंडितों वालण।
किंवित रनि क़ब, उल्ट जो कानसी।
राज के कालों क़मि, जब उल्टद्वाण
स्वाभाविक हलट क़मि, रजक ले पँचान।
बैठी ने कच्चरी तब, हुसरा दिनया
उन्नद अब समझानि, रजक मनमा
साधुक उत्तरा रथा, खराक-फू भारी
उल्ला हल्ला करि बेर, मार महतारी
कुर्मू के मारी बेर, कर वरावहर
साधू तब हल्ला कोड़, चेतु साही बेर
य अर्थ विकल रजा, साधू उपदेशा भा
बुर हजा उ साधुक, क्या ठाच मनमा
मोही बन्द शुरु भायो, गुरु उपदेशामा
काल बसी गोप तब, रज क मनमा
बुरी दम शौक जब, बुर बासो जाना
हर मलि बाल पर, मलि जो ध्यान
करो नि बनाय भाई, कैँको बुर ज्यान
मलि बाल मल काम, ईमाजि ह सान
मंत्र की जो बाल पर, रज भाई गोष
वा सम्रक हई बेर, बुर मानि गोष
साधु करो मारी कोड़, सिपाही हरो ले
साधू पाल जाई बेर, मारी दी लातोळे
उठे बेर गुरु करो, कबा दवे लिया
भुज बति बिदू बेलि, साधू दवे दिया
साधू करो कुब दवे, बर भाई गया
राजा गोपीबन्द तब, रज वास मचा
किर मनमे हई, शहौंच सोचमा
ग भारी हसी रचि, बैठी महल भा
मैंने नहीं कही है, चर्चकी फिरका।
क्या हैं महन्त कैलूँ, उपदेश पाता?
तिपकह जो भेजि हाथ, तब रनवाद।
‘गीतिचन्द्र बुलें ब्रज, लयाबो मधुर पासा।
गोपीचंद्र बाई गोप, हैडी के पासा।
फिरक मन में धतर, लम्बी सियूल साया।
मेनावति पुछो तब, नत चलै हाटी।
हुन सान किले चल, कैसा हु गुरु चोती?
गुरु लैं तथा कौं चला, हो बता मंकड़ी।
उपदेश जान चला, ही ना टिकड़ी।
गोपीचंद्र तबहूँ, हुड़ ईजा बता।
में किलेकी में त्युल, उ साधुक सांता।
उपदेश दिया ईजा, उ धौं गी साहू लैं।
भोज दुर लाग ईजा, विक उपदेश लैं।
गुरु उपदेश दिया, माता केन समर्थ।
में बोती निज दिंदी ईजा, तुल मेंज कौं।
दोहा—पचीस पकड़ ले हुण्णी, पांच पकड़ ले भूत।
सीस साधुस में भारो, तीस मार अदभूत।
गुरु उपदेश सब, माता बते दिया।
आपड़ साधुक ईजा, तारिफ कबलिया।
उपदेश अर्थ ईजा, दंडी लें समकाय।
भोज लाग बूँ ईजा, गुर्सा आँग बोध।
सरू कीं चन्द्रिमां, य दोहा सुणाय।
हुड़ जे सबुज वाँ, सुख फरकाय।
देवी हैं निकास रघु, गुरु दोहा एक्रे
सार्व उपदेश एक्रे, निकल वा व्यर्थः।
सम्प्रदाय के मार कोय, ब्रह्म तोय दर।
माता कबीर मारी वेर, जोभी मेघ धर।
काम कोध बहकर, सबं बौड़ी धर।
अभतुलबे एव ईशा, चधी गी जहर।
गुरु उपदेश एक्रे, माता समसेम्बा।
सुख क्या ध्यान हरि, एक्रे सुख केढ़ा।
पांच सुत हया क्या, पांचों दिनंत्रिया।
पदीस में पांच बोडी, पुर तीख हया।
परिसुति चर्चा, कृति नारिया।
सब मन बस करी, जो साधू हसिया।
साधू उपदेश चर्चा, य एक्रेर रहय।
सुर प्रांती करूँ भर्त, कसिक निमाय।
समस्ती मोरीचन, महेशिक बाता।
मन मज संशया लाग, दुःखी हईं माता।
मोरीचन मन मजि, फिकर बरह।
मेंनाबति चले हात, चढ़ि जा वो केढ़ा।
रंद बीठ मोरी चन्द्र, ईज के निर्णाय।
कति बानु भावे ईशा, गुरु देवे हाच।
गुरु कही क्वा लेखि, लील भरी चेरा।
मंगी एक्रे समस्ती में, हैं मोरी अदेरा।
मेंनाबति सुटी बरे, विषाध हैं जेढ़ा।
अब मोरीचन म्यार, कती बचां केढ़ा।
कसी भिल सोची लिया, कन हई बोधि। सार खान दान पारि, दान लामी बोधि। मैनावती कहरी भोल, फिरह रहैछ। 
ब्रह्माज्ञ कि माया सोह, सब ऐसी हैं छ। गुरू सारलनगर बब, सराप दुयों के। 
मयर गोपीचंद बब, कक्षीक बचार। लेखि चिछूँ मैनावती, नौ नाथों जो हंसी। 
बपरासी मेंज हाल, चिछूँ जो दि हंसी। 
गोपीचंद नाम पारि, रचिचा भंडा। चिछूँ पढ़ि तब भोलि, गोरख हाथ पारा। 
गोरखज्यु तब भोलि, बतानि बर्दा। 
सब जो जमाल हिटो, मैनावती घर। रिजिया भाई हय, रचिचा सुपार। 
सब जोग जमाल वां, है गणा तैयार। 
सब भंजा आई गया, बागड़ किनर। कारपिया व गोरख ज्यु, हेड सत्रू देश। 
भंज जो घुड़ा सिया, बहाल है रन। अन्तर की दम लगे, कीर्तन करन। 
हमर तरफ़ मे साता, भाससि तवहंसी।
पहली में मैनावती, अंत जो लिएँ। 
गोपीचंद साथ लयारे, हाल ले जोखिमा। 
तब कनि गोरख ज्यु, मैनावती हंसी। बड़ू मैनावती, छुड़ी महाराज। 
गान खोली सुड़ी लिया, य मेरी घरजा।
गोपीचं चारी च निकलं गया।

म्या गोपीचं पश्च, है जया दयाला।

गोरख ज्यु तव कल, सुश प्रेमनावती।

कवा काम लिखित तल, बुले नय एठी।

कवा वातावरण हुँख थर, कवैं मंकवै।

की को आँख तर राई, गज छीन दंगी।

प्रेमनावती हाथ धरि, उपलेख धुनकर।

बमा को गुरु बैठ, गीरी चरोङों।

दोष हय भरि गुरु, मायाक करि दिया,

नामक कोला बियोग परि, बरि गोर दिया।

म्या गोपीचं गुरु, हृद मच्च दिया।

मन व्य गम गम, वहुत भरिया।

जलन मेर दिया गुरू, जालन घर पांचा।

उपदेश निघ कोइ, सम्भवि वे खसा।

गुरु जालनघर उपलेख, उपदेश दिया।

लेखि बेर घर त्याग, मननी सोपी दिया।

कंठी जे चुनै बेर, बैठ करहरीमा।

आर्थ में सम्भवियो कोइ, गुरु उपदेशा मार।

इस्त अर्थ शते बेर, मंदिर लै सम्भव।

पंढ़ी का सम्भव मार, राज अराई सोय।

भूर्मा रज रज भाय, पुंजुङ भागमा।

गुरु जालं घर कुषा, खेलौँ दी कुवंमा।

गोम्या ज्यु करू तव, सुश प्रेमनावती।

म्या गोपीचं आजु, कवा बीगड़ हंगी।
साधु की जो हत्या कौंद, पाप बड़ा मारी।
मनस्का मुनि साशा, नरक में जारी।
मोरींद भाग भारी, पाप बढ़ि होल।
खुंद कर दर, विल, भाषा भुगाल।
में न वह के सहन माता, ये तु है प्रभावी।
गुर बालानार क में, रहन भागी।
भन्नारी रुख लागी, गोरखा भागी।
साध में हुि, गोरींद, माताक भागी।
जय ज्यले कसो गुरु, जरुर बचाओ।
हारा हुई तुम्हारा रोज़, खेवक बनाओ।
यह ज्यल हुड़, दुरा न बोर।
ज्यल ज्यले कसो गुरु, बनाओ भवार।
गोरखा ज्यू सब सूदी, दरा में जजागी।
कोशी भकुळ माता, दू पर ज पर।
भन्नारी ज्यले कसो, पर झाड़ गरू।
भूर बालानार कसो, घड़ू देख मद।
गोरखा बाढ़र कर, चेलो हाती कर।
बलस्स जगाई बेर, सिवा लयाओ कर।
ञाति रति पर तुम, भलख जगा।
संतार पाकड़ हवे, बैलो पर भवा।
गोरखा का चेखा भव, बट लागी गथा।
गुका नामल सब, भलख जगाय।
गोरखा नामल सब, बसति लगानी।
किसा सब खानो बेर, हार हंसी भारी।
कानिया झाड़ी मन, भापुरा चलों हांती
माती बर निचा तुम, ल्यांकों कोंच बेटी
जाँ जैल मोरखा चेला, जोही भन जाय।
चेते म्यू प्रासंग्य का, घर जन पाया।
कानिया का चिला सव, बटे लागी गया।
सत में गोरख चेला, रास आया।
दिया गुरु थेलों कली, मेटे है बदला।
संगद हैं गोव तब, दि दिलों विचर।
गोरखना चैलोंक सत, लुटीय खपर।
हनै हाँ नेला भाई, गुरु पास घर।
गुरु हैं क्षितिज करी, लुटी य खपर।
गोरखा लैं मुझी बेंग, दीन ताल मारा।
कानिया के रित पढी, दीन है बजाछ।
गोरख जमात पार, भाग लागे भाँख।
चीन लिय, हाँथ पाल, गोरख बजानी।
बंपट थेलों उपर, बांच बसानी।
क दि दिलों विचर, झुक बाड़ मार।
चारों बोर हई श्री, सुख हा हा कारा।
कानिया का थेलों पार, सरफ वहर।
नेपाल हैं गड़ सव, हैं रें बढ़रा।
कानिया बजानी तीन, उतर वहरा।
नेपाल में बजानी सव, है जानी तैयार।
गोरखों के मार हंगी, करनी तैयार।
आपदी आपदी ज्यान सव कली ध्यार।
गोरख ऊर्जानी धर, पत्र के संतर।
कानिया की जान में, होश न कपरा।
कानिया की गोरख पै, पार निस वसानी।
गोरखा तु इश्वर कि, बड़ भारतानी।
पंश कंद यारी, उदान असंतान।
त्या कर्न दिला कनी, अपर में ज्याना।
—गोरख नाथा का कांग्रियां को—
देहा—हें गोरख सुन कानिया, तेह सीवी पेष जुशा जुशा।
नार से नार प्लान्थार तुक्हार, नीच धर में व्याह दुमा।
सारा अभिमान चूर्ण कर तेह तुलारी का पुत्र बना दुमा।
गोरखा कानिया की, हमे सार माया।
समुद्र मध्य गेछ, हमे हा हा कार।
कानिया का मंत्र तब, एक निच चलना।
एक वी गोरख नाथ, हजारों उपपर।
तब वी कानिया कनी, सुर दे गोरख।
सोल कला वे दिखा है, बड़े छो मुरख।
प्रार यारी त्यार गुरु, संगल दिप।
चतुर गुरु कस हाांड़े, ब्रज मंदार भाँ।
इक निच वे गुरु, मंदार खड़ा।
संगल दिप वे गुरु, लया तु कंगल।
जो गुरु के पैली ल्यान, उ खाल मंदार।
पिछन जो गुरु एले, चिक हड़ पर।
कानिया ले गोरख के, ऐसी बोलो मारी।
बड़ चेना निच रहें, जुरु नेम पारी।
गोरखा ज्यूँ तब कनी, मानियों हैं बातें।
त्यर बात सुणी म्थर, बस्ती मोह माता।
स्मर मुह हय मामी, बट खान दान।
उंच कोठ बसनाम, उंच जग मान।
तेहा मुह पीर दिया, जानी कहीं धुना।
तव सरिण मोहर अर्तिन् वैधी कुवा हुना।
मनों बिनती सिंदूर धरी, त्यर मुह मथ।
क्या बताछै बात अती, गुणां कस रख।
तू लिहा आपशा मुह, कुवा गाडी अती।
में ल्यानु आपशा मुह, तान्गल दीप वैती।
गोरखा ज्यूँ तब जानी, चोरी कुवा पारी।
चुड़ौरी बघूरी ओर, मंड दिया मारी।
कुवा मंजि लिद ब्रह्म, हदे गो चौगुंथा।
जतुक माठिल काँच, हदे भोल हुंथा।
येतु बात गोरखा ज्यूँ कुवा में कैं गया।
सांगल दीप हंसी बालु, बट लामी हुंथा।
कामिया करै क्रान्त, तेवटी है आवाला।
हुंटल फारवड ब्रह्म, कसाहो कपर।
सब भाषा आई गया, कुवा का धिन्नार।
खोद मयो लिद कसी, कसी बंझ कपर।
नौ देर जोलायी गेछ, दस गुंबा रे गोय।
बजु लिद मथ भाय, हुंथा हंशा मथ।
कामिया का चेनोदै बां, काट कथा करी।
खिया बात होछ्र कनी, सब जानी हारी।
चालिस दिन में सब भक्ति गाय करना।
मुरु जालनाम भव कृत्र रहना।
गोखा की उत्साह, समस्यागोरा।
गोरखा पद्मच जानी, शहर करीवा।
बिलादीया मिल गया, अभिमान वदमा।
गोरखा के समस्यानी, हरेक उत्साह।
हर गेट पारी कानी, झाखो री संतारी।
सापू कानी जा देखनी, बोली दिनी मारी।
गोरखा ज्यू सोची बेर, कसी जायु कनी।
उडी बेर जव जाना, ये देखिला कनी।
गोरखा के मिल गया, रामनाथरी तब।
सब धज्ज बेर कानी, कां जाध्या तब।
तब कानी रामनाथरी, हम जामू चोटी।
संज्ञान हृदार, आच्छान धर जानी।
नाटक कहसी जाय, पड़ी रौशन रासा।
रज महानं अचान, न्याय आर भासा।
ईंद्र कसी पार हई, पदगिनि राशी।
के बातकी कसी मिष्ट्व, बड़ी झा सर्पिंश।
समस्यागी गोरखा ज्यू, मन्त्र जो यासी।
उनर तवलांच कसी, विमार के दिनी।
रामनाथरी गुढ़ मया, गोरख ज्यू हंसी।
तबल बजाण कानी, की भा तुम कसी।
गोरख तैयार हंगी, तबल बजानी।
रामनाथरी झंडी बेर, सुखी हई जानी।
रासवरी

दोहा-कर नादक कहने लगे तब, मुनो भस्मार तुम बांध
एक नागरी की नौकरी हैं चब्ब, चलो हमारे तुम मांग
्यांच सुमया तनाव पड़ता महावरी, को भावा दिवार का छोटा सुमया
खाना पिना एक मार दमाल, विस्फोत बम बिहारे तुम
गोपाला तैयार हैं, संप बदलनी।
गामारी भाषा भज, बड़ हारी आती।
पहुँची महाभ, चपायत रजया।
रास पड़ी बेज तब, सार शहरा।

बनी ठनी सव बघा गस बेख देखी।
पोखरा न्यू तबलमा, पड़ी बेज, रेंशी।
दोहा-बड़ा रास बिचला, शहर पर जाहू डाला।
है सारांगी साज मजब, अधी तबले बाला।

रास महदनघर भज, मार्गर करनी।
शहरा शहरमा सव, रास हली करनी।

सजायी शहर करनी, करी वे रोशी।
चाँदी का दोस्मा तब, लाल दीन जगानी
सकारी मंदार खोली, पाकर पकवान।
सव खानी पीनी तब, जाकर रोही मन।
तैयार है गया तब, खाई पेंई बरा।
मनदनघर रास की छी, करम की पेंई।
उत्तरक नर नागी, जम हई गया।
कसी हौं रास करनी, देख दंगी भाया।

बनी ठनी रासभारी, है गया तैयारा।
पदमीनी शायी बैठी, रज मच्छनधरा। 
शरणार्थियों का

धूम-धामने खींचने की राग वज्राश्रो, सांस्कृतिक पर मट्टक सटक 
विच छेड़-छोड़ खालनी भावा, त्वर्ते में मारी चटक चटक। 
माराट भटक के गाते हैं, पल्ली कुमर मह बटक सटक। 
विच ईशए में आमीकी बरते, ताली हात में पटक पटक। 
गोरख का तवलमा, नावहा में जानी। 
तवल भावाज परी, खुशी हईं रॉनी। 
गोरख तवल मज, मुद्री वर्जीड्डा। 
जाग मुरु मच्छनधर, गारख भागोम्ब। 
तवल भवाज सुदी, रज चौंकी गोरख। 
गोरख के नाम पेटि, काली लिया कौंडा। 
दिल में किचक करी, धर धर कापंछा। 
उठी बेह तथा विच, सरु के देखोंडा। 
तवलची है पुक्क मोह, मच्छनधर नाथ। 
गोरख हैं भाईं रखा, कि तुम्ह साखा। 
रव मच्छनधर कणी, किचर मनंग। 
गोरख भावाज दिली, सुदी तवलमा। 
तवलची गोरख कनी, मच्छनधर हात। 
ऐठ दुर बैं गारखा, कावे बाल पेटि। 
तवलची गोरखा फिर, बनानि तवल। 
रवु गूढो रज तव, हदें जी बहालता। 
खुशी हडगो रज अब, ईनाम बाहुल्य। 
काँटें दिया हाति घुड़डा, काँटें घन दिल्लाँ।
राज मच्छन्तर भारत है गोष्ठ बहाला।
गोरख से भार बिया, उन भक्त भक्त।
क्षमांगोरख नाथ, कलश मन्दिर।
दृष्टि उड़ी गोष्ठ बांगी, देव जो गंगार।
गोरख तब्र वाजे, राम बाजे बाजे।
बाज मुख मच्छन्तर, गोरख यां भाव।
जिस स्व चौंकी गाँठे, गोरख भवाओं।
गोरख भाषों का, संपन्न दिपपां।
भाषों गोरख बेति, भ्रष्ट इस हंस।
भज सब नक्त करी, इत भारी जाल।
गोरख भवान जाने, त्यह गलती।
लग हैँ, सेव निराकर तव पुछ माया।
गोरख स्वाम राज, तब पुछ माया।
त्यह तबलमा करी, क्या घरी रहेता।
गोरख भवान सब, यां बति भवान।
तवल की पूंढ काली, गोरख फूंढ़ा।
अतर है जानी भाजू, सेम कोटी हांजा।
बंगुडी क वरों, गोरख हैं गोप।
युक भक्तन्तर काली, नवर निभाय।
गोरख मिलनि तब, तवल मिश्रा।
युक वेला वात करी, आदेश हैं बेखी।
बह युक साधू भेस, गोरख हैं भया।
गोरख को माया मत, युक दरी गया।
रज मच्छन्धर तवः नाथूः भेन करी।
गोरख त्वा सामस्मां में लखर है बानी।
पद्माणी राष्ट्री हेंद्री। गोरखा ज्युक बहौ।
नी गह वीज गोरख गाँवी। गोरख सहस्व।
ें गोरखेकै हुँता कृत्ति, परी हंसी बर्मा।
थेम हाँ गोरखा ज्यु। परि हैं विषया।
गोरख के रिहे बड्डी, शलाय भंतर।
सव परी वन गया, बर जो बानर।
गोरख भंतर पारी। पद्माणी हार।
शुले नेमें पद्माणी, नहल कंदीरा।
पर चार देव उने, नि राई काहौ।
गुरु मच्छन्धर होप, उड़ी गे उड़ी।
मच्छन्धर भान्ञि वेर, द्वीण्ड्रा मिरेंरा।
गोर ज्यु भौशि व्यानि,हाय भाषीम्बारा।
गुरु मच्छन्धर कस्वी, गोरख समस्मानि।
स्वर साथ ध्यान गुरु, कीले छोड़ करी।
समी दिपम गुरु, बाद गझकोटा।
हमरी तरे तुम, करी गया खोटा।
पद्माणी राष्ट्री गुरु ह्रुपल व्यहाई।
मच्छन्धर मार्ग लिंगी, याँ हाल के रहू।
मच्छन्धर डे जानी गारख बातमै।
न्या करी जां भाव करी, संगल दिचमा।
गोरखे के समस्मानि, गुरु मच्छन्धर।
तिरिया की जात हई, डिगो गी भाषीरा।
कूट वाना संकल, ईमने न कर।
ऊन सतवाल म्यू, बुद्ध स्थान घर।
गुस्स भज निराशा, सावु हई जाच।
मन मज क्या भरशी, छोटी मोटी बात।
जत सब परि खिया, जम हई जानि।
गोरख हैं हाय बोढ़ी, खुदा लै पढ़ि।
गोरख हैं सब परि, माफी लै मांगनि।
पुकार गोरख हुड़ी, दृष्टा में जो शानि।
टमके खागेय कनि, टुमर शुभा।
जीव लग्भ दांत दल, रहो मर-पूख।
गुरु मच्छनघर तब, दिकर करनि।
गोरख सामड़ी भज्जि, गर घर कांपन।
दी व्ययोक हाय थापी, गुरु मच्छनघर।
बया के जां गोरखा कनि, लागी रेंछ दरा।
ढि व्ययोक हाना थापी, गोरखे के सीपनि।
या्-दै स्पर्गुरु माई, स्थान कर कनि।
गुरु मच्छनघर कशी, गोरख समकानि।
टम के लिखी गुरु, पेचि चाणु कनि।
वैलाग रज जयूल, राँच भा मंडार।
नौ नया सिक्को बमान, हईं रं हाजिर।
जालनघर वेलो साथ, मेरी तकरार।
कानिता दुर्गद खास, हरे बिच हार।
जो गुरु के भैली स्थाल, त्रिच बिच हईं।
जो गुरु पहिन भाज, सदा हार रहैं।
कहिँपक साथ गुरु, दास मारि ब्राह्म।
गुरु मच्छन्धर सुधी, तपार हैं गोय।
की जे गोरख कन्ही, गुरु समकानि।
मे देखिला उनौ कन्ही, तु बेहोकरा कहिं।
बो छा हो मंच खोंदक, तो को लिजोला।
सज भैंजी तोप साध, चिन घनि जोला।
या मैं कोज से दिनू, घोलागढ तका।
मनक भरम विक, सिमे छिला चका।
तव जे गोरख कनि, गुरु महाराजा।
तव वड़िन फाँज तोप, भोर न के साजा।
निकण गृहान्त गुरु, कौंज व तोपूंक।
अभिषान रहे मॉय, वड वड लोधोक।
क्या लिखिन गृह गुरु, जा तक गोरखा।
मनतो माजि कितिला, समु खसी राखा।
गुरु मच्छन्धर तव, सुधिया रहया।
गोरख कर मास देखी, तव हरी गया।
रायी पदभीनी मेंजी, गोरखा खुद्धी।
गुरु माई गुरु बानी, तुम्ह हार्ष।
गोरख ज्यू हारी कनि, गुरु मच्छन्धरा।
शाफ का ईनरी रकम, जसी हो उचाया।
गोरख दया मे आनि, भेड़र चलानि।
पदभीनी सकल तव, सुंदर बनानी।
गोरखा ज्यू तव कनि, पदभीनी हारी।
शवमाल धमाद कहे, निकण कहांती।
मन अन्य गँत्व भूमिक, धरिये व्याप्तमा।
माधुर्य लक्ष्मी छाय, गुणिये मन्दि र।
जा भक्त महालों महिम, कर कार वार।
सुख कर पूर्वा पाठ, मयारानी पाव।
तथ भाषा कृतिये बेर, तब चमन राम।
पंद पिड़ हेमें कोश, मन्दिरंगर हातिर।
सच कृति मन्दिरंगर, गोरख जयु हरण।
गृह भाई लिवेह तुम, जाए धुमु हय।
जामलाप संग भयं, नाई पोई भय।
खाड़क ठेम्मा तुम, बेर लौटी भय।
गोरख जयु वर लाम, तुम भाई साज़ा।
किल हें स्मार जानि, पकटति वैं हाल।
गृह भाई गोरख के, कला जो दिल्लियाँ।
गोरख में दिल्लियों की, पार निवेशनी।
गोरख की डार खाईं, दुः चाप रन।
बापस गोरख उं, गृह लोपी दिख।
चमननाथ रूढ़ लाग, बोडी देर मझी।
जंगल की पीढ़ तव, भागे कोश भाग।
गोरखके मेघ भिं दियो हमार सातमा।
बेर लौटी भाई बोला, खाड़क ठेम्मा।
गृह मन्दिरंगर कृति, सांता जा गोरख।
समा मज लंग कृति, बंडे छे भुरख।
पृथी वरे भागो कोय, किल हें स्मार।
जब दिशा दूबी जैल, लौटी चयानस।
गोरख उपर बट लाम, गुरु भाई सातमा कित हवे भयार जाई, दिखाने चक्रमा।
जलानि रंगर भोत, मारातनि वसानि।
भाँजीरे गोरख हार्ती, धर ठंोला कनि।
गोरख ज्यू पर ल्याया, मुख के सोफनि।
भितर बन मज धरि, पेट पेट करि।
तव कि भाँजी हम, धूपी हसी बान्।
जंगल की सैर करी, ठंड पायी पीनू।
धूमधम भाँजी कुबक, टकी लेन तिटू।
जा गोरख साख कनि, खुब लिए कुटी।
बुबारी यो हो पड़ि गई, मारियो चढ़ा।
गुरु स्वरुप पारी, गोरख ठपारी।
पेट कल्या खालो और, हकोइ कछोई।
बार बार की करीकर, ईंसी फीराई।
भाँज रात बाजी हई, गोवां बट ठंोला।
या आफत कुटी बेर, अजाद रहोला।
गोरखा लिगाया तब, दिया भाई कली।
उ दीनु की भाई रूढ़ी, उर्जान की निहुयी।
गोरख लौटिनक, पेट दिया फाडी।
पेट सवर खाली करी, अवश्य दी गाडी।
लास लेन उठाद बेर, धारे छप मा।
एकें बेनब बास कोति जेंटक घासम्।
अवने लिखि सब, ऐठु कवा करि।
काँटीहं न याद बुझ, मति दिया हरि।
उड़ी बैर नमी रेखा, जैसा छाया ।
दिया चैनी लास कशी, परिश्रा हामी ।
मूंक भटी लेई बैर, डाँड़ जौ मारिए ।
बैल रववास मता, सीक पटी गोला ।
मच्छनघर भालौपर, भासोंकी जो धारा ।
उस में जावी कमजर, रोकी दिनी धरा ।
वा जान में सांघ मजा, फिर देखी जानी ।
उस हन बेदि लिया, मन जान मानी ।
वियोग में मच्छन विहोश है जाह ।
मच्छनघर मंत्री तब, बैल पड़ याई ।
मंत्री की गोरखा हंटी, सुध रे फकीरा ।
विहीं भारा भाला, फासिय के भालीरा ।
साधू बनि हत्या केक्की, विकड़ी देखौला ।
फासिय तकतंता री, विकड़ी लटकीला ।
ंगाल वैं ऐति भालें, संगंल दिपमा ।
सत्वा फासिय जेक्की धिया। त्यार करमा ।
तोरे शहरमा तब, हंस उपद्रवः ।
गोरखा ज्यूँ देखी रनि, सभूक कहतिला ।
मनों में गोरखनाथ, बीन जो बजानि ।
दिया गुरु माई कशी, पश्चात लगानि ।
दोरी बैर भाली कीन, स्वर गुरु माई ।
बाल सज घरी रेख, पक्की बैं रंगोई ।
न्योन हंगी गुरु माई, दोरी बैर भानि ।
बीन भाला गुरु माई, लोहीं जो भानि ।
गोरख की माया भरि, चद्दित है जानि।
शूली माला माया घरि, वहना मुख पीनि।
कति वरति ब्राह्मण कीन, भमशान आभाय।
बीजा चरनों भरि, सीस नर्रि मयार।
तब जै गोरख कति, सुन्दर गुरु स्वपर।
स्वयं सात चलों हंसी, हैमाओ त्यार।
निहितना जब शुरू, के तार सोचुन।
संवह दिशके सब, में पलटि जानू।
बचायों की शोट गुरू, य स्न्यर बालिमा।
हार बिरत हैं रैंछ, मंडर खेंटमा।
शं कति मच्छनधर, बिकार हिट्टोला।
टपन छर्ण भर, याबैं व्या लिजोलाल।
सिन्दूक वे गाडी हिला, चार बोड़ा दारा।
पन्ह्रे खुनक इंदु, पूर तीस लेरा।
लगे जानि सट भयं, गुरू मच्छनधर।
गुरू गाईं गोरख साथ, हैं गच त्यार।
चार भड़ आई मयार, शहर है भ्यार।
छाड़ी दी शहर भयं, अडाद बार्रा।
दौंहा-गोरख हिंदुस्तान में ब्राह्मण सुन्दर तीर,
वहं एक दर्शन हीज परे जल नौर।
तालेमें कवल फूल खिल खिल लाये,
शीतल जल प्यरन नर नगर देवथान सवसी।
सारस हंस कर्लिक किलोल करे, बड़ दर्सरबरमे नहाये।
फिर उस दर्शन की छायामें, जा मुक्त खारन विस्तर लाई।
व्याख्या

व्याख्या का व्याख्या तीन बने व्रत पाये,
हृदयें में दूल लसाकर पदार्थ जो भारे।
पदार्थों जैलाहिश्चा, गोरखा ज्यु पारी।
तिरस्कर सबकी कैसी, आई में खरी।
तिरस्कर सबकी ब्याख्या, यु खेत में देख।
हम केही ठीक न्याय, ब्रह्म जरी यता।
हमर संगल दिप, के गये उजाशा।
गोरख के हांड लिंजि, पिन मई दाख।
गोरख के उन्चा निचि, बात जो खुदानि।
सुस्म में गोरख ब्रह्मा, मन्त्र ले मारानि।
पदार्थों राजी तु, खुत खन मरा।
बंधि मे केढ़ सभ, बुध समुदुरा।
वौर बारी शुदे पारि, भाग लगे दिया।
गुरु मन्नवनपर रेंज, गोरख के देखिया।
तब कैसे पदार्थ, हाथ जोड़ी बेरा।
मन्नवता वनि गोरु, करिया उचारा।
तुग्नर हातल गुरु, सेंग में न्याय जुला।
उचार के दिया गुरु, जबं खुश पूला।
तब जै गोरख नाथ, दया में भाजानि।
बोधा में शुद्ध पाह, सभ समग्रानि।
गोरख नाथ का
हा-जो गीर गई सहस्त्र में, शायत सार सुभाष।
जो तट सरयर की पट्टि, तेज़ पत्तन तन पाव।
शीतला संगानि दला, धावा नभबारी।
बल्लेबाली मच करि, पुजी नर तारी।
हुड़ लोग पुट दिखा, वुझरी रहिला।
गोरखे नाम गुड़ी, गृहिण नि चला।
ए स्वर वजन बनि, अदूरु भरपारा।
तुझ्यावि यं दस्य हई, जारभक सरा।
गुरु चेपा थाई त्राया, ईलाक मदरमा।
सांड पंडे हाजी हुड़, मलीन ठी खासा।
उन्हीं चाया खुट बैटी, लमान विडता।
उवुभुज देसानि ढुंढ, चुंडर सहारा।
तब कनि गोरख ल्यू, गुरु भाद्रो हाति।
शहर दे मिठा माँगी, लई आयो ऐति।
तव शहर में जाई, पलख लें रोगा।
सांड पर मोगी बेर, जबरी लोटी भाय।
बोर शर खुच लागी, गरिया फिकरा।
शाप के मीर नेर, लोटी भाय परा।
बार जाति चित्स्तिक, बनाईं शहर।
गोरखक गुरु भाई, उठानि खापरा।
प्रोलि घर तन मज, बट लागि भाय।
पाँचि शहर रनि, अलख चला भाय।
जैक घर काली जानि, सब दिनि भाई।
चेसिक नि दिन भिक, के को कमाई।
बट बन्ना साँख भें, माँगी लें खड़ीया।
ल्हु जस रोज जानि, होंग लें कंडीया।
गुरु माई चमन साधे, चूप चाप शुनि।
बापस में धारि हात, तुम जुला कैन।
वरिण्योद्ध पर मुजि, गाय ही मरिया।
केशरियों के ख्यातिम, गोट लो धरिया।
यह दश एक जव, तुम रे हृदमल।
गाय खरि हारे दूल। तब माधु हारि।

दिन अना मर्दिन दिल, ज्ञान पक्षिना।
खंग भिं बेर तुम, कहू भेंजन।
लाभ मधि चाट गई, ग्यां दी गुरु माई।
मरि गाय गौजति हरी, बढ़, लाभ गई।
केठि मे हुमति तब, चूर बस शपान।
बुलि गया सुध चूप, भगवा दिनान।
गाय कर्ण रहति बेर बापस या गया।

उपदिन वरिण्या तब, मालि दिश मना।
दिया गुरु माई तव, चूप पारि शनि।

बूढ़ काम करि बरे, फिर ले पढ़तानि।
पाप चढ़ि मोछ कनि, हमर मिरमाँ।
का हुटल पाप कनि, को नायु ममां।
चार जाति ब्रह्मा तो, होष में आजानि।
हलूव जो पूरी चमि, खथर भरति।
हिटी कनि तुम कसि, पहुँचि आन।
तुम्हरे गुरु के हम, दर्शन करन।

सब माँड़ दाँती आरति, गोरख ज्यू पाठा।
गोरख के हात पाठे, खासद दी खासा।
खेलनि स्वर पत्र, इणु कामो रेषा।
पुराण हलवा तब, सिकार है गोरख।
गोरख झूम वदन में, चढ़ि गो जहरा।
कसि कसि बीति कवि, चाज़ तुम पर॥
क़ो पर मांगड़ गढ़ा, बलाचो मकड़ी।
हिंदु क धरम निम, ध्यान ना काकड़ी।
जो बात विषिया हई, बलाच चमननाथा।
गोरख के समझानि, दिया माई साथी।
सारी बात दुड़ी बेरे, चढ़ि गो जहरा।
गोरख नाथ लें तब, तीन ताल मास।
तिरुल कि मार करि, गुरु माई पारी।
लापड़ि जलमाना, चूण लगो धारी।
चार जारि वरियों की, नि हुड़ि आमें।
गोरख लें उद पारि, अग्नि लगे हां।
गोरखा गुरु माई, अररज करनि।
हमर उघर गुरु, तुम कथा कवि।
बंधुनाथ में मारि गोच, करिया विचार।
भापुड़ हाये ले गुरु, करिया उपार।
तब जै गोरख नाथ, दया में भाजानि।
गुरु माई उघार तब, देहा में बलानि।
दोहा-बिल फेल तुम्हारे वदन की, फलि होचे प्रभात।
एक होमा सिद्ध स्थानमी, एक होमापार नाथ
तुम्हार नाथ ले जोग, मंदिर चलेला।
जो, तिले घोँ सब चम पूरा करिला।
गाय मंत्र नियम हल तुम्हार पुज्या।
सब लोग पुजा केला, तुम्हार प्रयाम।
चार जाति परिवार ले, भरन करन।
गान भजि हम गूँह, जलिगी कौन।
फल मिलि गया गूँह, करनि के मस्त।
चाप्पड़ हातल तुम, करिया उठाओ।
बलीयो पुकार ज़ैद, गोरख कानया।
उद्वार गोरख कौन, धावर द्याओ।
दोहा गोरख नाथ—
सिद्ध स्पन्दीय पारस्नाथ की, पुज्या तुम दिन रात।
ईमी में उद्वार तुँबाद, यही योग की है बात।
बुक्ती नहीं होगी, कापे जो जल में रोगी।
बार बार पुकार कहे, जयि गोरख बोयी।
धनदीलत दूर्व अमोचो, न अपना मजहब उडायो।
और देवता नहीं मनायो, न अपना मजहब जनायो।
गोरख की काया देखि, गूँह मच्छनपर।
दिल में फिर फिर, लाभी रेख दाए।
न्यायिक सर्वा पारि, भइ बुँदा होच।
विज्ञान दिलम भरि, मन मन रेख।
गोरख के साथ मज, लाभि रनि बटा।
जूढ़द पहाड अमा ईशान क पाटा।
उज़ाड़ छी चारो और, बंधमर भर।
बार पार लाभि रेख, बिच मज गुजा।
विषा गुहु चेता तर, भोजि बैठी गया।
मंडल जी बचुर बौधी, नस में रहया।
पूजा कै मन्दिर मार, मोहों में पीठ बानि।
हवा साई के भर, खाली अनु करती।
गुरु मन्दिर में अब, गढ़ पुष्प हरि।
मौलि देवढ़ मार, गुरु मोहों करती।
कबन जहाँ छीर चित्रा, लल कहन मोहा।
खेत स्वरुप मूल, खाली कर मोहा।
ति करार लगर हबल, न चल दारा।
साहू सलो पन मौल, जोड़कर बंकरा।
तीन बहाउ। करि, मैं पसरी जानि।
मानने गुरु तव, रुपम बर आनि।
मोहों की नीद देरी, मोहों टोटो लटिन।
खिर मोही देरी बेर, आँध्र भाई जानि।
उठी बैं मोही नाथ, गुडों गुरु कोंचा।
तम्बर सिरक भारा, कम करि हाँच।
तव करि मन्दिर, पूर हई गोंचा।
पहा लिया। भंडार माँ, मंडल है गोंचा।
कंभल आगोंड़ केला, हाँ हलें बेरा।
तुल करि दि मोही, महरी अचेबा।
सब तुड़ी मोहों सून, ठोस उठा जानि,
बुलंद पहाड़ में जो, पिसारू की गार्ति।
मंडल मारी पहाड़मां, नुकक चनाय।
मिर मिर पवित्र सत, कबन है भाय।
गोस्ह जी, मरने बरह हाटी।
उनके माया सब, भोली मरी बैली।
चाहे बना चुहिया तु, या बना धारुख।
उनके का उल बना, उनके जो दुखल।
उनके ता रूट भात, इन खा हैलु।
रचि ले मंडीर गये, पाकि मुक्त ऊंह।
यह देखि मकडनबर, कैप बरा था।
बढि शकली देली कौंड, तै मोंश पा।
गिर मिरु परत कौंड, गोरखा अवो हाटा।
मे बनन हवार गुरु, है जाति कमता।
दूर दूर लोग ऐलं, दाफ घरि बेरा।
केलिंगाल मन भरि, केलिंगाल बेरा।
कुछ दिन बाद गुरु, है जुला खालि।
मकडी बनाएंगी गुरु, हंजति जो रैलि।
गोरख नाथ
दोहा-गिर मिरु को गुरु मोरख ने जो, दिशा मंत्र का घोर।
पह जल मारा मंत्र से ओ, कर दिया जो प्रसाद विलोर।
कवान सम सब जो नूर तेरा, ले जाय चाहे जो मो चूरा।
घटे खेड़ कमी न रति मर, रहेगा जो अब पूरे का पूरा।
गुरु चेला वट लामा, अभिन जो बया।
कलकत्ता शहर मजि, प्रसंग है गया।
काली माई मंदिर, मे ऐलो उर लोश।
ऐति कीला ऊपर कमि, मंदिर का शोरा।
हात जोड़ी अराधना। काली माई हरि। ।
भूक तिस ठाई गोय, त्यर दार कसी जी।
काली माई आराधना, सब भोग बनि। ।
सिर काटि काटि बरे, मेट जो बहान। ।
बासी की बो बेर हरे, खुल संग धारा जी।
काली माई जे हो माई, कनि जे बौज बार। ।
गोरख जो देवि बेर, सोच में पढ़ि। ।
अन्याय या हर कनि, मनदीर में जानि। ।
काली माई तब केलः सुना रे गोरखाय। ।
बिन मेट किले आलहे, बढ़े लैं धूमान। ।
बहम राज महादेव, बड़ बढ़ देवा। ।
नौ नाथ जीरीसी सिद्ध, मेरी कनि सेवा । ।
य सब ईलाक स्पर, मेट जो दिजानि। ।
सिर काटि काटि बेर, खुन में चढ़ि। ।
तु भाली या चालिहात, बड़ अभिमान। ।
काली माई हाति तब, गोरखा जुँ कनि। ।
मांगी मांगी हम स्वाम, मेट क्या जहान। ।
जोशी हई जात माता, काँ बैं मेट ल्यान। ।
हुना मेरी देवी देखी, बौर देवी अर्जुं। ।
धापा देवी मनसा देवी, देखी जो चरित्र। ।
बौर देवी नन्दा देवी, सबू में समान। ।
मानिल की देवी देवी, पढ़ि दया दान। ।
हाथ जोड़ी ईनों हरी, सुशी हई बानि। ।
एक देवी तु देखिष्ठे, जो बनि आसमून। ।
तब केंद्र काली माई, गोरख ज्यू दांति।
ते जस हजार आनि, चरिणानि जो ये थे।
तिपारि चलानु गेंद, भापू तिमुला।
कलेजी खाँदी त्यान्, सून पिरोला।
तब कति गोरख ज्यू, हात जोड़ी थोर।
काट मेरि गर्भन दू, किंके छा भयंकरा।
या खाजा कल्याण म्यार, या पिवा-शुना।
ठीका छौं झांसि खोलिय, पत्थर भाचिना।
मदी बनि कालि माई, तिल परा रार।
पुनिगे गोरख पेट, जो कलेजी पार।
गोरख ज्यू जुनापाय, भज संस काह।
बेटक मिसेंर तब, भाग बागे दिन।
काली माई पेट मज, बलांग मेंगेखा।
सत हार बन्द हई, स्वार कति थेंदा।
गोरखे आपीन उसी, धार नि बसाई।
कालि माई करतुच, फेख जो है गई।
आखीरमे कालि माई, माफी ले माफीही।
के जिख है गोरखा, में हारिणी केंद्रा।
कोहा—हे शतपुर में जल गई, जलदी धुङ्के सम्भाल।
ईस जलति हुई भाग से, दिजो वहार निकाल।
मालुम हुआ गोरखनाथ कलावारी,
जा लिया जिलोकी से कुन्यारी।
इल कुदकर पै कुरानि गई,
तेरे योगम्यास पर बलिहारी।
तब जे गोरख कनि, कालि माई हाति।
लुण मेरि चंतो कसी, ध्यान घरि वैनि।

धनायक के लीज़ कनि, तुल य बगमं।
भोख बन्द हरे त्यर, चाहइ घमढ़।
काली जयक लोँगों कसी, तू तेज़ करिं।
हरेक लोँगों मैंंिि, मिर कट रंज़।

बड़ि पापी देखि हुँ तु, सुशील ले भाविरि।
मे दीन वचन दिवा, हात मारि वेला।
वचन दिवेर विर, वचन निमालि।
वचनों खंडन करि, विर चिति हैल।

हुँसि जगे भाव परि, भावधाि पी वैल।
पुल पाखी दूप वैल, हुंजे कुशी रल।
कालि माई गोरख क्री, बात मानि गेला।
वचन दिवेर तब, मन्जुर छा कंडा।

गोरख त्या खेंगि, दया में बाहेरा।
कालि काहि हैंटु, नासिक क द्वारा।

दोहा—जाभो भय हम मन मव विश्राजो,
छन लुब्रया को सिर नाभो।
चार खटे के विष में दुःखे,
ईन्द्र समान भय हम गाजो।।
कालि माई गोरख काँ, वचन मवहे गेलां।
गोरख काँ कालि माई, चाय छूर्गीछ।
कालि माई तव जेंच, मन्दिर सितेरा।
मानि गेल सब बाह, वचन दिवेर।
श्रीभगवान् श्य चुंड हूँ, भांडिन की बलि।
कालि माइ सोभन्द, भांडिन कहें।

युरु चेला वट लाग, कलकत है भांडिन।
समुद्र पर करि, कलोली पढाँड छून।
गोस्वामि नंद मच्छनघर, भय धारी धारा।
सततुज व्यास नदी, पहुँचि गो किसान।
युरु चेला नदी महा, जसुनान करिन।
कालि नाष्टी ऐति, शिव दर्शन करिन।

दोहा—जहां पढ़े मनर में ज्वलाके, जोगी नाद शब्द गाएगी।
हां कालीनाथ कलेवरने, शिवशंखुके दुःख पाएं।
धन धन लाटो वाली, देख दिल की है खुशाली।
गूढ़ गूढ़ फूल हार जो, तब लाता है माली।
ज्वला जी का

दोहा—ज्वल जोत ज्वलामुखी, घटना गाज दर्शन।
युरु गोस्वाम को देखिये, प्रत्यक्ष रूप ढिया धार।
युरु गोस्वाम व ज्वल ज्वलन की, आपसमें जै करनाम हुई।
जगदम्बे चन्दन चरा रही, जोगी नाद शब्द पर नाद दुई।
बौलत हैं तब जय जयकार, सो खुत होता निस्तार।
चलो गुरुदेव खाना खाओ, त्यार हुआ है संधार।
गोस्वामान का

दोहा—माताजी हम आये रसोई लाय के,
तम मन को फिकर हरामी।
हमें कन्हाम दिद्रार की भोर तम,
भब्बे दुर्गे आदि कुमारी।
मे जोगां तेल दाम है तू महा उज्जाला परदानी।
हम निरंगण गुण जोगिया हैं, तू शक्ति भादि महतानी।
हम हैं गदा ज्ञेयानि, ते जो धियर महारानी।
शक्ति रूप का नहीं खस्त, हमें धन्न और प्रश्नी।
ज्वाला शुभी तब जेठ, मुहोंयुक्त वात।
नारां हैंक्षता, तुम, की हमार सात।
मंडारं, बेहतर गुरू, मना किले कोंच।
भानु मन्दी हैंदर तुम, परहेज करों।
वस तुम खरा गुरू, रिस पके ढिंग।
एक बसे एक महा, खनसाम के बूह ढिंग।
जब कै नमनधर, जुड माता वात।
पार्श्व विशिष्या भर, ते हमार हात।
जुड मन्त्र आग जली, करिये ल्याक।
हम आजु, पूंप हर्शी, बंगाल शहर।
ती ले मंडार रच, भोली जाई अदानू।
इतुक जा भिन्ना सत्र, जब करि आजू।
दोहा—जब तक हम आते नहीं, जोत आग न तुम्हें पाय।
राजा हिमलाल नेपाल तबल, जोशा पंगों को लाया।
तब जेठ ज्वाला शुभी, मोरखा ज्यो हर्शी।
वेफिकर जायो तुम, लोटी अया येती।
आग नि बूमिया पाय, हम आग तक।
तुमहरु रहेल गुरू, बचने क बाधक।
वाई हो वारिस मौत, चाहे चल पॉन।
हे लोटी अया गुरू, य स्मर बचन।
हिन्दी

दिनिया दित हाव अब, गोरखे हामी।
गोरख हिन्दी दिन गुरु कहानी।
उधाना सूंय भाय जली, पांशि जो खालीं छा।
छित्ता भीतर पाना, बीसाड़ पाना छा।
गुरु महंद्रनबैं तव, चिनत है जान।
य सत्य भाग्य पानी, कृपी खौल कहानी।
गोरखे माया छा कनि, मन में सीरचि।
चूर चार डिंगा मां, बट लागी रैनी।
गुरु जेता आई गधा, धुली कवरारा।
कुलबुद बढ़ा अधा, बीस कीस पाना।
बारों बोर ठहरों हार, बरफ जमीं।
आँख या कौल कनि, बिस्तर लगाता।
दोहा-शीत जल से गंगा नहाय, सूरज से ध्यान लगा।
नजर किरन से ज्योति नया, नहीं हटने जो न पाये।
सुरज का।
दोहा-सुरज सब लैखा समझ के, कौं सिया सम्मान।
कठी सरीं पहाड़ पर, मेसर पर रहा जो ध्यान।
सुरज झास्बेंस कनि, गोरख ज्यु जप्पा।
किस्मों प्रकाश धारिं, सोज करा तप्पा।
बरफ पिघलि गोरख धावक तप्पा।
पहाड़ जल्लांत मया, तेज गामले।
गोरख का जप मज, फर्क नि हय।
शिवली की भार जेईं ठुंड मानी मय।
दोहा—कितना दुख डरते, जाहे अगनी में ठाल।
है तुमकी अखयाप चाहे मागे या डाल।

दोहा—तब पूरे सिरद डो गये, जगत में तुम साधरण रोगै।
बच तुम शिवरंक के माकिन, में अर्टल मिय जो होइ।
बेरी सोलमला तपन जो, तब ने मब सिर पर ली।
तु भोलकला संपूर्ण जोयी, बा भाट कला में ती दी।

सूरज है गोरख जयू, प्रशांत करनी।
वृजी में वासिय तब, अखय वालानी।

पैली कर हुसमनि, बाद मब ध्यान।
गुरु चेला बट लाग, हे जानि त्यान।

पहाड़ भारत मज, लड़की में गया।
गोरख जयू शंती कथि, तब की आफ़ा।
भगव मैं गोय गुरू, तुम दीन पांजिना।
हमैं उठार गुरू, कथा हल आथ्रीन।
तब जे गोमस कथि, जो पहाड़े हैती।

पत्थर पहाड़ तुम, जमिया छा चेमी।
न तुमम्र मोल तोल, न बुढ़ ध्यानमा।
पाव छोटी झेल जला, तोली वे तराज।

दोहा—बीच गहर अभीर मलवार जो, पानी बसूरति बुढपटे।
भजन है चशम माशूकों के, लो, पसार्द कार्य,पन चढ़े।
लगायत नाथी, बालक, गुरू वचन उम्री केवली।
भजनपर देशी झेर, हैगन है जानी।
उस्ताड़ उस्ताड़ भाव, गोरख छा कनी।
नचन बलिकाँगी ठारे, कुंज्या भवतारी।
विचनु महेश, हमो, बढ़ तप भारी।
दिया गूह चेला हव, बट लागा गया।
श्रेय में जो चौलास, प्रवेश है गया।
गीत नाद बजे हाल, भंवतालिस शवदर्मा।
राम शिव धुन गाई, सारे सहरामा।
शहरक नर नारी, लूजिल हई गया।
घुर के लिखे कृत, गोरख भा गया।
गोरख घुर माई, लूजिल हई जानी।
उज्जव एक तब, गीत जो बचानी।
मनावति गोपी चन्द, आ-पहुंच-उद्यो।
पहुंचिगी सब लोग, उन मिलों हरी।
मनावति हाल जोड़ी, सिर लै खुशक्ष।
कुलश सब तब, गोरख ले पूछिया।
तब कच्च मनावति, गोरख उघर हुती।
तुमहारी ढा या गूह, लूजिल र्या ऐती।
गोपी चन्द करी गूह, उतारिया पार।
मनमे बहुत हरें, ज्ञानकी किरार।
घुर जालनपर है, बघाओ ईंक्ष।
सोपि जाने गोपी चंद, बघ तुम करी।
गोरख नाथ-मनावति से
श्रेरहा-फिकर रहा महादेव की मसमाङ्ग चनुसार।
फिकर हुआ भगवान को, दस बार लिया भवतार।
फिकर हुआ धीराम को, महारान सार में धाया।
फिकर रहा श्रीकृष्ण को, कला से डेरा दूर पाया।
गोरख त्यू कनि तब, कानिया है बाता।
खुशी हया गुरू तप, खुशी जोग जमाता।
तब कनि कनिया ज्यू, दया च तुम्हरी।

शृवी हया सब मंड, ज्ञान, हर्मी।
हृदय दर्शन हई, पाप कट गया।
जो भुख वक्तार हई, खता साफ करा।
तब कनि गोरख ज्यू, कानिया है बाता।
म्यर गुरू कोले हूँ, त्यर गुरू साता।
तेरी हई जीत कनि, शेरी हई दरा।
गुरू दुहा निकालिन-बै, लैं हाच मंडारा।

यां बियं संगलदीय, गुरू हिया गोय।
मोत दिनो एहा पर, कोसी नील होय।

त्यर तकरार हैं, पक्षिण रहया।
कानिया गोरख कवी, हाल लगा मया।
गुरू रहै गई कोष, कुवा क मितेर।
मरिया है ज्योत जाणी, कुछ न खुबरा।
लाखो मजदूर लगे, नि बसाई पारा।
दुखा दुखी लोट जम, हई में चुक दरा।
तब कनि गोरख ज्यू, सुंदर रे कानिया।
में गुरू लिहिती गोय, जो संगल दीया।
गुरू कवी सात ल्याय, मंडारा निकोर।
तु किले विल्याय गुरू, नि आई शारम।

तब कनि कनिया ज्यू, हाथ जोड़ी बेरा।
गोरख ज्यू तम हया, पुकर श्रीतारा।
तम्मे हैं जित गुरु, मेरि हई दरा।
माज वरि में रहोल, चामिदु तम्मे।
दोहा-राजनिव जामी मारदिया, अनसुभा नेप पाली तुम।

कुवेरे पीर जालनधरको, कामुख बहसिनकालो तुम।
मेनङ्गीती केल गुरु, मेरि कृपण लियो।
कानिपाकी खग गणी, माफ़ करि दियो।
नाथीक खग नाथ तुम, दिरो का चा पीरा।
सार जाग जमादय तुम, बड़ सब सीरा।
कुवा वैती मारी दिया, मुरु जालनधर।
स्थान करि दिया गुरु, गोपीवन्द भारा।
मेनङ्गीती आँखों पर, आँखों आई गरा।

तब ते गोरखनाथ, दया में आ गया।
गोरख शापित तव, गोपी चन्द्र हाता।
जमात लिचेक जाति, कानिया के माता।
कुवा कंगी सब भंगा, जम हई जानी।
सुंग रे कानिया तब, गोरख उपूर कनी।

लेर गुरु दृष्टिया छः, य कुवा वितेरा।
बांविति य लोह गाड़ी, वाली खरी देगा।
सारि वाल कानिया जो, गोरख के लगानी।
लाखों मन लिचेक गाड़े, दुखाह गोरी कनी।

ब्या बात है मेह्न-कनी, समस्त नि खानी।
हम तंग हुगी गुरु, दया करो कनी।
सुंड माता भेनाशती, गोरख उपूर कनी।
गोपीवन्दसंपत्तिय वेति, दीन तस्वीर चढ़ीनी।
राजहसी बोधाक सज, हात हो तलवारा।
भजो निधं चैतन, चुला कारीगरा।

तसबीर वन वेर, लय्यो घुशा कारी।
मेनानति आहर दिखा, कारीगर हंगी।
तब कोंडा कारीगर, हंजूर हंजी।
मेरी लापक सेवा कोंडा, बताओ बांधी।

तब कोंडा मेनानति, खुंश कारीगरा।
गोपीचन्द सकलिं कीन, वनी लया तसबीरा।
सकल नकल सग, हंगी बेढा एका।
हात परा तलवार, धूरी हो पोताक्ष।

कारीगर जांचा तब, तसबीर बेंगाजा।
तीन तसबीर बेहंग, तैयार के व्याख्या।
गोसखे भाधौन, दीन तसवीरा घरा।
देखा बै गोसख तब, मारनी मंता।
अपस में तसबीर, बात सीता कनी।
एलख एलख करी, एलख जो रनी।
जोरतम सब लोग, चकित रे गया।
हर लोगी कानिपाके, चूप चाप रया।

तब बैं गोसख कनी, सुनक रे कानिप।
हुंवा बैं निकल गुहा, दुहगतमं या पाया।
कानिपा जय तब कनी, में कश कसहुं।
गुहा बैं मरी जा। केंद्र कनी।
गोसख चटकी मारी, मंत्र जे मारनी।
तीन बार धूमि करे, चॉफेर जो लगानी।
देवी देवी देख बनी देवी, उड़ जाओ ब्रह्माण्डः।
ज्योति रंग धार लुटा, लैंग लगे बिंदुः।
छोंगे गये अस्मान में, कितने हाथ अपेरे॥
गोरख की माया तुषी, चबित हैं सबा।
हिंदों का गोरख को
देहा—हे मत मुँह हम बना कर, कितन देश को उड़ जाय।
देह को हृद बनलाय, गुरु कौन द चन्द्रप्रति लाय।
गोरख तीर्थों को
देहा—एक वर्ष दर साल में, कीर्तना नमून वार।
हाल गुलफल पात का, करना दुध बहार।
दो दिन बाद कही तीसरे पहर, कभी भी नहीं ठहराना।
फल दूलफली अन का दाना, खुब में न पाना।
आकर करना दिखाना, भूल में मिली खाना।
हरे भैंड नौ साम कुबे में, फिर जगल चढ़ बांधा।
ईश्वर की माया देखी, गोरख हातमा।
खुदी वे चकित हला, गोरख हातमा।
काश्यप जमा त सब, देखिया रै गई।
गोरख आधीन कार्या, नि चलाह पाई।
गोरख का पूलों को
देहा—युन माया के पूले, तुम्हे देता हूँ उपदेश।
ईश कुने के जीव में, रहे जोमी जो दुर्ज्ये।
हैनात कुबे पर करता हूँ, बात समब दिल पर खाना।
दिल दससत न खाके, गुरु जलनधर आदेश बरना।
कोई बात उल्लुढ़ छूड़, तो मन के तूप हो जाना।
जो कहे पीकर तुम्हें, बात उसकी सह केना?
तव कवि बो पुतला, जलनधर हाँ।
दरशन कर्नु गुरु, भाव धरी बैठी।
नौ नाथोंक नाय हया, योम धुगराजा।
आदेश आदेश गुरु, वङ्कि ओळी।
जलनधर गुरु तव; उन्हें हैं पुड़नी।
क्या क्राम लिखिता तुम; चैति वहा कनी।
पुंछ ततों पुतलोक, कवच दरकार।
कवच त्यथा पत पाँगी, के कीठ पुकार।
देशा-पीर जलनधर मानियो, गोरख का आदेश।
हुबे के उपर बड़ा, वह सोपी चन्द नरेश।
सदीच नरेशवरी जी, जोंग उपदेशको आयाधा।
उपदेश को समाह स पाया पंत्री से फरमाया था।
उन्ता ओघ वताय मंत्री ने, राजा राय में जा गया।
जानीसे निरंजानी हुया, लक्ष्मणपुर में भुल गया।
भामसिल पानी कम बानी, जैकोड़ख निकानियाँ।
गुरु जलनधर तव, प्रस्सा में भा जानी।
गोपीबंद राव त्यर, नवत हजीं कनी।
बिखरा है जैल कवि, होल सो गाथियाँ।
जनर प्यारक मर, स्वामी हैं चानिया।
गोपीबंद इजो कनी, मूर्तिरं भयमा।
कमें सव झो कवि, मंत्रत्र दृषियाँ।
तव कैसे मोख ज्यूँ, जालनघर हाती।
राजा गोपीचन्द्र पुरुष, मारी गोदा चेती।
अर्थ जो निर्जाल गुरू, मंत्रियों कर्षी।
साता मेनानाटी तब, समभाष उक्ती।
समभाष वे ज़ग तब, पल्लिन पल्लिन।
तुम्हर तरफ वंदि, गमने गुहाय।
पूतला

dोहा—असल राजा सरल की, नकल बनि खूंश रंग।
चाह चह चारचा करे, बहाता हुै सतसंग।
तुम ज़ैसे महापुर्ण की, चार चार आदेश।
पड़े हैं चागा तुम्हारे, कहे आदेश आदेश।

दुख भंडारण गुरु कुमा, मान आदेश हमारी।

जालनघर

dोहा——कौन भूष हैं कुम पर, अत्मूत रूप का अकुस।

भयकर बार बार करे, घुस्ना बचन स्वरूप।

dुर्भाषे से क्षय मतलब, बेकार क्यों सताता हैं।

एक गया दूसरा खड़ा, आदेश आदेश पुकारता हैं।

गोरखनाथ

dोहा—गुड़ी भोपीचन्द्र मरने का, जग रचा तिरास।

सोक पढ़ा रत्नास जो, ईंधन हुए उदास।

बिलाति ईंधन चढ़ा आया, पल में अमृत लाया।

परियों ने गोपीचन्द्र भस्मी में, अमृत ब बरसाया।

ईंधन ने दी ज्यान, आय दो अमृत प्याला।

तब गुरु जालनघर, गुस्से में आ जानी।

जोगी कही मारी ब्रज, चंबल का कह।
गोपीचन्द भस्म हज़ा, शरीर कच्चा।
नि हुर्म किलक कसी, य ज्य्या कच्चा।
गोबर ज्यु तव कसी, शरीर जालनधर।
गोपीचन्दु बलि गोय, वर्षा शरीर।
सोल सीनानिया विका, बिखवा, है गया।
गम फाइ माता बेकी, बिखवा है रहा।
सीसे पूलवे का
हे हे—एक वचन दो वचन, दिया गोपीचन्द मार।
अब तुम सीसे वचन, लीजों तन निसतार।
नी नाय बौरसी सिद्र के, सीर से आदेश।
ब्रह्म ज्र गोपीचन्द की, शुभ महाराज आदेश।
हस सुधार देकरो को, माफ कर निसतारो।
वद्ध कुरु हमारे, आगे लड़ा तुम्हारे।
तव जी पूछि अब, जालनधर नाथा।
आदेश आदेश वाल, कोष्ठ कुर्ता मथा।
कन्घ चार चार झूँ, कवच त्यार नामा।
माला में जपने तेत, कवच खास काम।
तव जी गोबर कसी, जालनधर हाँती।
गोपीचन्द रवास, शोक भारी सूखी।
सोल सी जो गानियोल, सोक कर भारी।
शिवाजी जों पारसती अगा, उई टूंग पारी।
शंकर भगवान तव, दया में आ गया।
राजा गोपीचन्द स्वयं, न्योदन रही गया।
वैज्ञानिक का
बौद्ध-रुद्र ईश्वर दोनों हैं, जगत बीच मनोहार।
सेरी गुहा उदय नाथ की, मिट्टी नहीं जुलाता।
शतगुरुकृति मेरीभक्ति, हो ब्राह्मणसृष्टि संसार।
बहु माता रूप स्वीका, तेहे शारीर मन्यते।
एक दो तीन मनोहार, गोपीचन्द तस्वीर मनोहार।
तब उसे गोरख जनी जालनथर हाटी।
गजव के दिया गुरु, तुम्हें जो बैठते।
शंकर वचन सह, मिट्टी मिले दिया।
जलु कमल हठ गुरु, यनि कंपाय छिड़या।
जल तक यह गुरु, आशीर्वाद ना हो।
जल रूपी गंगा माता, अनन्य है गोरख।
गोरख है बात, कनी गुरु जालनथर।
जजे ले में कुर्ब लेत, वगर कहर।
न बीक खंडम छिड़या, नत बीमड़म।
भाला कपी बैठी छिड़या, वाय किननम।
गोरख ज्यू समर्थ, जालनथर करह।
गोपीचन्द सारी बात, लगानी कहार।
उलट जग्ये जय कर्मी, मन्त्री ले सम्बन्ध।
मन्त्री क सम्भाषा पारी, रज बाई गोरख।
गलती करी बेर हुरु, रज पड़ताण्डव।
जालनथर नाथ का सरफराना।
बोला—जिस पंत्ती ने युक्ति देय, नहीं मूर्गोत रख चेत।
खाक खलक की झाँता, पड़केमा दिन रूना।
बिन दीस में वर्षाद होए, दर 2 धका खाबे ग्रा।
ही उठ बुलक नामः में, मजरकर जर जाके ग।
पाने न बस्ती भूत हो फरावे, बिरचख से मलरनहावे |
गोरखनाथ, गोपीचन्द को |
तब कनी गोरख ज्ञु, गोपीचन्द हैं यू।
तेरि बारी बाचने कनी, भद्र ता ईंदाह।
पत वार पार हलि, या हुहु निहुहू।
भारी छा दाद नभ, भज में मंग कही।
सारी बात श्रों तेरी, तकदीर पर।
या इसे मस्स बेती, या हले भमर।
बंरी बेंग में नावती, बांदू चाही गया।
सब संग देखी बेंग, हिकर कमया।
मेंनावती चलने कही, गल में लंडा।
भूकी चारी लेखेर, मन मन रहेंछ।
गोरख ज्ञु तब कनी, मेंनावती हाँती।
हारी छा दाद पेच, देखी लिनों बेती।
मेंनावती मांखों पारी, बाँसों कीछ घारा।
च्युलक बियोग मोह, पढ़ी छा गम्भीर।
च्युल के पोसाग पैर, तैयार करिविया।
खूशूख छोड़काई बेंग, मनमज रहेंछ।
गोरख नाथ जलाजपर को |
देहा-गोपीचन्द चाह पर खड़ा, वे ज्यान की बासा।
करे वाँछते सोतो सिद्ध, गुरु गोरख के पास।
गम फिर वेचारे की, दूसर भजन आदेश राह।
केरवन मनुष जाहि लाग, विन गमलार आदेश राह।
अलनधर का गोरख रहा।

दोहा-सिद्ध गोरख कीन है, देता खड़ा प्रज्ञान।
हमतो सदृप मन्द करै, व्याप बने महताज।
रस भरी जब बोल रहिया, पार तप नमाने हे।
क्रो गुप झुंप कहता है, भ्रमर बैन मचाने हे।
कोन मतलब भावेश करी, हम जोगी जमाने हे।
रे यादम जा माग हु, भाया है कोन ठिकाने हे।

गोरख आलनधर की—
दोहा-गुरु तीन बार पल्ली कीपा, पद मेंमा का पूज।
अब रहा कर गये, सब जोगी अदभूत।
सोल ती रात बिठा दीनी, गोपीवन्द जो मारदिया
जग शोक कराय चापने, बीच अश्वस डार दिया
सब सिद्धों ने कुशा कर, दरगाह अर्ज गुजार दिया
अंह नागरण हुकुम हुआ, गोपीवन्द उमार दिया
तब करी आलनधर, गोरख ज्यु हाँ।

सन्तोक न करी, पलट न रही।
अभी बिपुल ईंधर जयुक चतन छै।
जो म्हर चतन हनी, अटल छै सर पूरा।
सिद्धों मजि सिद्ध हय, पीरों मजि पीरा।
नाथों में नौ नाथ हय, भेष में फली।
गोपीचन्द्र बनि जाल, भमर शरीर हि
य म्यः बचन छूट, अटल मै्यः पूरा।
बा तक भकाश, हय, जमीनक हांथा।
भमर झा गोपीचन्द्र, जनम का साधा।
शुभक बचन हुड़ी, हुड़ी हई गया।
शोरख ज्यो सुशी मज, फूलि नि समया।
बैलनघर हाथ बामी, इता वैः निकाला।
हव मैः निठाई बेर, है मया बहाला।
काविया जो बाई बेर, चवर सुकानि।
शोरख युध काविया के, देखिया रहनी।
मेनावति सुड़ी बेर, सुड़ी हई जेढ़ा।
गोपीचन्द्र हाव पारी, याल सजः दिंधा।
रतन जहिया हया, यालक किनरा।
वन्दुन भक्त सव, मरी मर पुरा।
मेनावति का हुल सन्धेश।
होला-जन्नत गोरखनाथ तुरेन, घन पीर जालनघर नाथ।
गोपीचन्द्र का कर दिशा, भमर जमात में गाथ।
घन मच्छनघर नाथ आएः, इसकी विपत हमारी।
घन सारी जोग जमात, भा समस क्रिदमतगारी।
वेश गम मिट गया पूल है, गुरु की है मेहरवानी।
गोरख चरन की दासी हु मैः, बड़ूल करीकरवानी।
राजा गोपीचन्द्रसाध्र बना, शरीर क्राममिटानेकी।
गोपीचन्द्र कोम्बलुरकिया था, भमरशीरथनानेको।
इसबे उगे दूसरे माग में देखिये।